वाट्सऐप @ 94140-78380, 92140-78380 | वर्ष:5 अंक: 261 बुधवार 11 फरवरी 2026 | दैनिक ई-पेपर

शाबाश इंडिया

@ShabaasIndia | प्लॉट नंबर 8, ओझा जी का बाग, गांधी नगर मोड, टोंक रोड, जयपुर

@ पेज 2 पर

मुख्यमंत्री ने गोविंददेव जी परिसर से विशाल कलश यात्रा का किया शुभारंभ

युवा पीढ़ी संतों की शिक्षा को करें आत्मसात : भजनलाल

मुख्यमंत्री ने गोविंददेव जी मंदिर में दर्शन कर प्रदेश की सुख-समृद्धि के लिए कामना की

संत-महात्माओं का सनातन संस्कृति को मजबूत करने में अद्वितीय योगदान

जयपुर. कासं

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने मंगलवार को जयपुर के आराध्य श्री गोविंददेव जी मंदिर परिसर स्थित जय निवास उद्यान से विधिवत पूजा-अर्चना कर विशाल कलश यात्रा का शुभारंभ किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि संत-महात्मा राष्ट्र को सही दिशा देकर सनातन संस्कृति को मजबूत कर रहे हैं तथा इनके विचार मानवता, सेवा एवं सद्भावना का संदेश देते हैं। उन्होंने युवाओं से आह्वान किया कि संतों की शिक्षाओं और आदर्शों को आत्मसात करें तथा भारत की गौरवाशाली परम्परा को आगे बढ़ाने में योगदान दें। शर्मा ने कहा कि बाबा बालनाथ ने भारतीय धर्म एवं संस्कृति को आगे बढ़ाने में अद्वितीय योगदान दिया। इसी परंपरा का बाबा बस्तीनाथ जी महाराज भी अनुसरण कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि हमारी संस्कृति सर्वे भवन्तु सुखिनः की अवधारणा पर आधारित है, जो सम्पूर्ण मानवता के कल्याण का संदेश देती है। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने बस्तीनाथ महाराज को दुपट्टा ओढ़ाकर सम्मानित किया। इस दौरान श्री शर्मा ने महाराज जी के आशीर्वचन भी सुनें। कलश यात्रा में हजारों की संख्या में महिलाओं ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। इससे पहले शर्मा ने गोविंददेव जी मंदिर में दर्शन कर विधिवत पूजा-अर्चना की तथा प्रदेश की सुख-समृद्धि एवं कल्याण की कामना की। उन्होंने मंदिर में उपस्थित श्रद्धालुओं से आत्मीयता के साथ मुलाकात की और उनका अभिवादन स्वीकार किया। इस दौरान मंदिर परिसर में बड़ी संख्या में उपस्थित भक्तों ने भगवान गोविंददेव जी के जयघोष से वातावरण को भक्तिमय बना दिया। इस अवसर पर विधायक देवी सिंह शेखावत सहित गणमान्य लोग और बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे।

एमजीजीएस रायपुर में ब्लेसिंग सेरेमनी का आयोजन, मेरिट में आने पर मिलेंगे 51 हजार रुपए, संस्था प्रधान ने की घोषणा

रायपुर. शाबाश इंडिया। माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की कक्षा 10वीं की परीक्षा गुरुवार से प्रारंभ होने जा रही है। इस अवसर पर महात्मा गांधी राजकीय विद्यालय, रायपुर में सोमवार को विद्यार्थियों के लिए 'ब्लेसिंग सेरेमनी' (आशीर्वाद समारोह) का आयोजन किया गया। विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन करने के लिए आयोजित इस कार्यक्रम में संस्था प्रधान नवीन कुमार बाबेल ने एक बड़ी घोषणा की। उन्होंने कहा कि राज्य मेरिट में स्थान बनाने या छात्राओं द्वारा 'पद्माक्षी पुरस्कार' जीतने पर वे निजी तौर पर 51 हजार रुपए की पुरस्कार राशि प्रदान करेंगे। समारोह के दौरान विद्यार्थियों का तिलक लगाकर और उपरना ओढ़ाकर अभिनंदन किया गया। साथ ही, उन्हें परीक्षा में उपयोगी स्टेशनरी किट उपहार स्वरूप भेंट कर उज्जवल भविष्य की शुभकामनाएँ दी गईं। कार्यक्रम का मंच संचालन शिक्षक कैलाश रावल ने किया। इस अवसर पर हरदेव लाल गुर्जर, पवन काबरा, रवि टेलर, सीमा कुमारी मंडोवरा, रतन कुमारी जाट और दीपिका त्रिवेदी ने विद्यार्थियों को संबोधित कर उनका मनोबल बढ़ाया। छात्रा माही, जेनिफर, नाजिया और कृष्णा ने सुमधुर बधाई गीत प्रस्तुत किए।

भारतीय सांस्कृतिक वैभव का तानाबाना 'पिंक फेस्ट', राजस्थान इंटरनेशनल सेंटर, जयपुर में यूके से आई महिला, सूक्ष्म लेखन कलाकार निरू छाबड़ा चावल पर कैसे लिखती है देख लिखने का प्रयास करते हुए।

गणिनी आर्यिका संगममति माताजी का 19वां गणिनी पदारोहण एवं 53वां अवतरण दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया गया

झालरापाटन. शाबाश इंडिया

परम पूज्य तपस्वी सम्राट आचार्य श्री 108 सन्मति सागर जी महाराज के परम प्रभावक शिष्य आचार्य श्री 108 सिद्धांत सागर जी महाराज की शिष्या, गणिनी आर्यिका 105 संगममति माताजी का '53वां अवतरण दिवस' एवं '19वां गणिनी पद दिवस' श्री शांतिनाथ दिगंबर जैन मंदिर में सकल दिगंबर जैन समाज द्वारा भक्तिभाव से मनाया गया। आयोजन के क्रम में 19 जिन प्रतिमाओं पर एक साथ अभिषेक एवं शांतिधारा की गई, जिसमें विश्व शांति एवं सुख-समृद्धि की कामना की गई। तत्पश्चात गुरु पूजन एवं श्री सम्मेद शिखर जी तीर्थ की पूजन करते हुए द्रव्य समर्पित किए गए। कार्यक्रम में विभिन्न महिला मंडलों और श्रावकों ने संगीतकार वेदांत सावला एवं राजकुमार जैन 'बैंक वाले' के मधुर भजनों पर नृत्य करते हुए संगीतमय पूजन किया और अर्घ्य समर्पित किए। समारोह में मुख्य रूप से णमोकार महिला मंडल, जागृति महिला मंडल, अखिल भारतीय महिला मंडल, आदिनाथ महिला मंडल, शुभकामना परिवार, महिला मंडल झालावाड़ एवं कोटा के श्रावक श्रेष्ठियों ने सहभागिता की। संगममति माताजी अपने प्रवचन में गणिनी आर्यिका 105 संगममति माताजी ने कहा, कोई भी व्यक्ति बिना गुणों के उच्च पद प्राप्त नहीं कर सकता। पद प्राप्त करना आसान हो सकता है, किंतु उसकी गरिमा को बनाए रखना अत्यंत कठिन और आवश्यक है। जिस प्रकार केवल पोथी पढ़ने से कोई पंडित नहीं होता, उसी प्रकार शास्त्रों के रटने मात्र से कल्याण संभव नहीं है। यदि स्वाध्याय के बाद हम दो पंक्तियों पर भी चिंतन कर उन्हें आचरण में उतारें, तभी सही ज्ञान की प्राप्ति होती है। दादा गुरुदेव आचार्य श्री 108 सन्मति सागर महाराज का स्मरण करते हुए माताजी ने बताया कि उन्हें वर्ष 2007 में औरंगाबाद (महाराष्ट्र) में गणिनी पद से विभूषित किया गया था। उन्होंने कहा, मेरी आर्यिका दीक्षा 29 वर्ष पूर्व 1997 में हुई थी। तब से आज तक मैंने गुरु के समक्ष कभी ऊंची आंख उठाकर नहीं देखा और सदैव उनकी आज्ञा का पालन किया। गुरु के बिना ज्ञान और उद्धार संभव नहीं है। मेरी अंतिम इच्छा यही है कि गुरु के प्रति मेरा विनय भाव सदैव बना रहे और मैं मोक्ष मार्ग पर अग्रसर रहूँ। इस अवसर पर बाहर से पधारे अतिथियों का समाज के प्रतिनिधियों द्वारा माल्यार्पण कर सम्मान किया गया। कार्यक्रम का कुशल संचालन राजकुमार जैन 'बैंक वाले' ने किया। **(रिपोर्टः अभिषेक जैन लुहाड़िया, रामगंजमंडी)**

जैन समाज को 'आक्रमणकारी' कहना बर्दाश्त नहीं, विश्व जैन संगठन और राष्ट्रीय जिनशासन एकता संघ ने जताई कड़ी आपत्ति

राजेश जैन 'दद्दू'. शाबाश इंडिया

इंदौर (राष्ट्रीय स्तर)। मद्रास उच्च न्यायालय की मदुरै खंडपीठ द्वारा हाल ही में दिए गए एक निर्णय (मुकदमा संख्या 3188/2025) में जैन समुदाय के लिए 'आक्रमणकारी' और 'घुसपैठिए' जैसे शब्दों के प्रयोग पर 'विश्व जैन संगठन' और 'राष्ट्रीय जिनशासन एकता संघ' ने गहरा आक्रोश व्यक्त किया है। संगठन के मयंक जैन एवं प्रचारक राजेश जैन 'दद्दू' ने इसे जैन संस्कृति के इतिहास को कलंकित करने वाला और तथ्यों से परे एक 'दुर्भाग्यपूर्ण टिप्पणी' करार दिया है।

जैन इतिहास के साथ क्रूर मजाक

विश्व जैन संगठन, इंदौर के पदाधिकारियों ने कहा कि जिस संस्कृति के प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव के पुत्र चक्रवर्ती भरत के नाम पर इस देश का नाम 'भारत' पड़ा, उसे 'बाहरी' या 'आक्रमणकारी' बताना हास्यास्पद और अपमानजनक है। जैन धर्म अनादि काल से इसी माटी का अभिन्न अंग रहा है। 'अहिंसा परमो धर्मः' और 'जियो और जीने दो' के सिद्धांतों के साथ इस समुदाय ने देश के नवनिर्माण में सदैव अग्रणी भूमिका निभाई है। विदित हो कि 16 जनवरी 2026 को आए 170 पृष्ठों के निर्णय के बिंदु क्रमांक 8 में माननीय न्यायालय ने जैनों और अन्य समुदायों के आगमन को 'प्रचारक या आक्रमणकारी' के रूप में वर्णित किया है। इस पर राष्ट्रीय जिनशासन एकता संघ के मयंक जैन ने कहाः 'इतिहास गवाह है कि 8वीं-9वीं शताब्दी में दक्षिण भारत में जैन मुनियों और श्रावकों का भीषण नरसंहार हुआ था। हम पीड़ित रहे हैं, आक्रमणकारी नहीं। एक संवैधानिक संस्था द्वारा बिना गहन ऐतिहासिक शोध के ऐसी टिप्पणी करना जैन समाज के अस्तित्व पर कुठाराघात है।'

टिप्पणी को विलोपित करनाः दोनों संगठनों ने मांग की है कि न्यायालय इस तथ्यहीन टिप्पणी को स्वतः संज्ञान लेकर रिकॉर्ड से हटाए।

कानूनी हस्तक्षेपः समाज के वरिष्ठ अधिवक्ताओं के माध्यम से इस निर्णय के विरुद्ध 'रिव्यू पिटीशन' (पुनर्विचार याचिका) दायर करने की तैयारी की जा रही है।

ऐतिहासिक साक्ष्यों का प्रस्तुतिकरणः संगठनों का कहना है कि पुरातत्व विभाग के समक्ष जैन धर्म की प्राचीनता के प्रमाण पहले ही प्रस्तुत किए जा चुके हैं; अतः अदालती फैसलों में ऐसी त्रुटि नहीं दोहराई जानी चाहिए।

विश्व जैन संगठन और राष्ट्रीय जिनशासन एकता संघ ने देशभर की जैन संस्थाओं, कमेटियों और श्रेष्ठी वर्ग से एकजुट होने की अपील की है। उन्होंने कहा, यदि आज इस 'काले अध्याय' का विरोध नहीं किया गया, तो आने वाली पीढ़ियां हमें इतिहास का अपराधी मानेंगी। अहिंसक होने का अर्थ कायर होना नहीं है। हम अपनी धर्म-संस्कृति के सम्मान की रक्षा के लिए लोकतांत्रिक और संवैधानिक मार्ग से अंतिम सांस तक लड़ेंगे।

उपाध्याय श्री विकसंतसागर जी महाराज ने बच्चों को दिया ज्ञानवर्धक आशीर्वाद, दान के स्वरूप पर दिया विशेष संबोधन

भीलवाड़ा (रोहित जैन). शाबाश इंडिया। परम पूज्य गणाचार्य श्री 108 विराग सागर जी महाराज के युवा शिष्य एवं चर्या शिरोमणि पट्टाचार्य श्री 108 विशुद्ध सागर जी महाराज के आज्ञाकारी शिष्य, श्री विराग गुरु तीर्थ धाम के प्रणेता वात्सल्य तपोनिधि उपाध्याय रत्न गुरुदेव श्री विकसंतसागर जी मुनिराज ससंघ वर्तमान में चंद्रशेखर आजाद नगर, भीलवाड़ा में विराजमान हैं। गुरुदेव ने अपने प्रवचन के माध्यम से दान के वास्तविक स्वरूप पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि दान वही है जो 'सम्यक रीति' से दिया जाए, जिससे स्वयं का और दूसरों का उपकार हो। उन्होंने वर्तमान में प्रचलित रक्तदान जैसे शिविरों के संदर्भ में अपने विचार रखते हुए कहा कि जीव मात्र के प्रति कल्याण की भावना रखना ही सर्वोपरि है। उन्होंने मंगल भावना व्यक्त करते हुए कहा– 'सुखी रहे सब जीव जगत में, कोई कभी न घबरावे।' महाराज जी ने जैन शासन में वर्णित चार प्रकार के प्रमुख दानों की महत्ता बताई, जो इस प्रकार हैंः आहार दान, औषध दान, शास्त्र दान, अभय दान। उन्होंने कहा कि ये चारों दान सर्वोत्कृष्ट कहलाते हैं। इनके अतिरिक्त जिनालय (मंदिर) बनवाना, जिन प्रतिमा स्थापित करना और तीर्थ वंदना में सहयोग करना भी दान की श्रेणी में आता है। कार्यक्रम के दौरान उपाध्याय श्री ने जैन पाठशाला के बच्चों को विशेष रूप से ज्ञानवर्धक आशीर्वाद प्रदान किया और उन्हें धर्म के मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। महाराज जी के धर्मोपदेश की समस्त जानकारी जय कुमार लुहाड़िया व मनीष छाबड़ा द्वारा प्राप्त हुई।

रोटरी मेडिकल मिशन का ईसागढ़ में विशाल चिकित्सा शिविर संपन्न

अशोकनगर. शाबाश इंडिया

रोटरी रीजनल मेडिकल मिशन शिवपुरी के अंतर्गत रोटरी परिवार एवं श्रीमंत माधव राव सिंधिया स्वास्थ्य सेवा मिशन के संयुक्त सहयोग से, मध्य प्रदेश शासन के तत्वावधान में अशोकनगर जिले के शासकीय चिकित्सालय, ईसागढ़ में सोमवार को स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में डॉ. कुलदीप रघुवंशी, डॉ. किरण मेहरा एवं उनकी टीम (नर्स, आशा कार्यकर्ता, लैब टेक्नीशियन, ए.एन.एम. व अन्य स्टाफ) ने कुल 319 मरीजों का स्वास्थ्य परीक्षण किया। परीक्षण के उपरांत आवश्यकतानुसार मरीजों को दवाइयां वितरित की गईं। इनमें से 37 मरीजों को बेहतर इलाज के लिए जिला अस्पताल, अशोकनगर रेफर किया गया। रोटरी क्लब की ओर से अध्यक्ष अजित कुमार जैन एवं विजय चौधरी ने उपस्थित रहकर अपनी सक्रिय सहभागिता निभाई। इस प्रोजेक्ट के तहत अधिक गंभीर बीमारियों से ग्रसित मरीजों को 17 मार्च से 24 मार्च 2026 तक शिवपुरी में आयोजित होने वाले विशेष शिविर में भेजा जाएगा, जहाँ विशेषज्ञ डॉक्टर्स की टीम उनका उपचार करेगी। वर्तमान में 18 फरवरी तक जिले के सभी प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों पर अलग-अलग तिथियों में परीक्षण शिविर आयोजित किए जा रहे हैं। रोटरी परिवार ने सभी नागरिकों से अनुरोध किया है कि वे अपने आस-पास के बीमार व्यक्तियों को इन

वेद ज्ञान

कोई व्यक्ति नैतिक नहीं बन जाता

जितेन्द्र सुमन

आधुनिक मूल्यों ने जहां एक ओर मानव सभ्यता को वास्तविक उपलब्धियां और वैज्ञानिक दृष्टि दी है, वहीं पारंपरिक नैतिक अवधारणाओं को गंभीर क्षति भी पहुंचाई है। इस तथ्य से आज कोई इनकार नहीं कर सकता। आधुनिकता के आलोचक अक्सर महत्वपूर्ण प्रश्न उठाते हैं, लेकिन वे उन ऐतिहासिक परिस्थितियों को नजरअंदाज कर देते हैं जिनसे आधुनिक मूल्य उत्पन्न हुए। वास्तविकता यह है कि आधुनिकता से पूर्व का विश्व पदानुक्रमित और कई अर्थों में अमानवीय था। प्राचीन और मध्यकालीन युग में व्यक्ति का कल्याण सामाजिक संस्थाओं के अधीन दबा हुआ था। व्यक्तिगत गरिमा को कई बार धार्मिक रूप से 'पाप' के समान माना जाता था। दासप्रथा इसका सबसे क्रूर उदाहरण है। उस समय सभी मनुष्यों को 'मनुष्य' की श्रेणी में नहीं रखा जाता था; बहुसंख्यक आबादी के साथ पशुओं या संपत्ति जैसा व्यवहार होता था। ऐसे बाजार थे जहां मनुष्यों की खरीद-बिक्री पशुओं की भांति होती थी, और उस समय का धर्म इस पर मौन बना रहा। यह मौन मानव इतिहास का एक वास्तविक पाप था। जैसे-जैसे आधुनिक आर्थिक शक्तियां उभरीं और औद्योगिकीकरण का प्रारंभ हुआ, व्यक्तियों को सदियों पुराने सामाजिक बंधनों से मुक्ति तो मिली, लेकिन साथ ही सुरक्षा के पुराने रूप भी नष्ट हो गए। इस संक्रमण ने जिस अस्थिरता और अराजकता को जन्म दिया, उसे तत्कालीन संस्थागत धर्म संभालने में विफल रहा। चर्च जैसी संस्थाएं भविष्योन्मुखी नैतिक आलोचना प्रस्तुत करने के बजाय मध्ययुगीन सत्ता संरचनाओं को बचाने और आधुनिक आर्थिक विस्तार में भागीदारी करने के अंतर्विरोध में फंस गई। ऐतिहासिक उदाहरण इस नैतिक विफलता को स्पष्ट करते हैं। स्पेनिश और पुर्तगाली औपनिवेशिक विस्तार के दौरान चर्च की संलिप्तता और उससे उपजी आर्थिक अव्यवस्था में राज्य की भूमिका को चुनौती देने में वह असफल रहा। परिणामस्वरूप, जनमानस ने संस्थागत धर्म को शक्ति के प्रति नैतिक प्रतिरोध के रूप में नहीं, बल्कि उसी वर्चस्वकारी व्यवस्था के एक हिस्से के रूप में देखा। यहीं से आधुनिकता में संदेह, प्रतिरोध और सुधार की प्रवृत्तियां उभरीं।

संपादकीय

जीवन का मधुर संबल है संगीत

आज की जीवनशैली जिस आपाधापी और भौतिकता की अंधी दौड़ में फंसी है, उसमें मनुष्य तनाव और अवसाद की बेड़ियों में जकड़ा हुआ नजर आता है। न स्वयं के लिए समय है और न अपनों के लिए। संवेदनहीन होते इस दौर में 'संगीत' केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि मनुष्य के जीवन में एक सकारात्मक क्रांति का आधार बन सकता है। संगीत और मनुष्य का संबंध उतना ही प्राचीन है, जितनी स्वयं मानव सभ्यता। जब

शब्दों का जन्म पूरी तरह नहीं हुआ था, तब भी मनुष्य ने प्रकृति की ध्वनियों पत्तों की सरसराहट और पानी की कल-कल में संगीत खोज लिया था। संगीत में एक अद्भुत जादुई शक्ति होती है। यह उस सार्वभौमिक लय से जुड़ा है जो इस सृष्टि और हमारे भीतर समान रूप से व्याप्त है। यही कारण है कि मधुर संगीत सीधे आत्मा को स्पर्श करता है और मानसिक बोझ को हल्का कर देता है। जब शब्द अपनी अभिव्यक्ति में असहाय हो जाते हैं, तब संगीत भावनाओं की भाषा बन जाता है। यह दुख में मरहम का काम करता है, खुशी के आनंद को कई गुना बढ़ा देता है और अकेलेपन का एक मौन साथी बन जाता है। आधुनिक चिकित्सा विज्ञान भी अब संगीत की शक्ति को स्वीकार कर रहा है। विशेषज्ञों के अनुसार, शांत संगीत रक्तचाप को नियंत्रित करने, हृदय स्वास्थ्य को सुधारने और अनिद्रा जैसी समस्याओं को दूर करने में सहायक है। ध्यान और योग में संगीत का उपयोग इसकी प्रभावकारिता का प्रमाण है। दैनिक जीवन में यह एक 'थैरेपी' की तरह कार्य करता है। कार्य की थकान के बाद मात्र दस-पंद्रह मिनट का सुरीला संगीत मन को पुनर्जीवित कर देता है। विद्यार्थियों के लिए हल्का संगीत एकाग्रता बढ़ाने और स्मरण शक्ति को प्रखर करने में सहायक सिद्ध होता है। संगीत की भाषा सार्वभौमिक है, जो भौगोलिक और सांस्कृतिक सीमाओं को नहीं मानती। हमारे लोकगीत, पर्व-त्योहारों के गान और सामूहिक नृत्य समाज में एकता और अपनेपन का संचार करते हैं। अलग-अलग भाषा और परिवेश के बावजूद संगीत पूरी मानवता को एक सूत्र में पिरोने की क्षमता रखता है। यह न केवल लोगों को जोड़ता है, बल्कि सामूहिकता की भावना को भी पुष्ट करता है। व्यक्तिगत स्तर पर संगीत आत्मविश्वास और सकारात्मक सोच का संचार करता है। गायन या वादन के माध्यम से व्यक्ति अपने भीतर की दबी हुई भावनाओं को रचनात्मक मार्ग प्रदान करता है। युवाओं के लिए जहां यह ऊर्जा और उत्साह का माध्यम है, वहीं बुजुर्गों के लिए यह भावनात्मक सुकून और मधुर स्मृतियों का झरोखा है। श्रेष्ठ संगीत वही है जिसमें माधुर्य, तल्लीनता और संवेदना हो। संक्षेप में, संगीत केवल ध्वनियों का समूह नहीं, बल्कि आत्मा का भोजन है। यह हमारे जीवन को संतुलित, तनावमुक्त और मानवीय बनाता है। यदि हम अपने व्यस्ततम जीवन में से थोड़ा समय संगीत के लिए निकालें, तो यह न केवल हमारे स्वास्थ्य को सुधारेगा, बल्कि हमारे भीतर छिपी संवेदनाओं को स्वर देकर जीवन को और अधिक सुंदर बना देगा।

-राकेश जैन गोदिका

परिदृश्य

दीनदयाल उपाध्यायः राष्ट्रवादी चिंतक और सजग पत्रकार

पंडित दीनदयाल उपाध्याय भारतीय राजनीति और बौद्धिक जगत के उन विरल महापुरुषों में से थे, जिन्होंने अपना संपूर्ण जीवन राष्ट्र की सेवा और भारतीयता की पुनर्स्थापना के लिए समर्पित कर दिया। वे केवल एक कुशल संगठनकर्ता या भारतीय जनसंघ के अध्यक्ष ही नहीं थे, बल्कि एक प्रखर विचारक, अर्थशास्त्री, समाजशास्त्री, लेखक और उच्च कोटि के पत्रकार भी थे। भारतीय पत्रकारिता में राष्ट्रवादी स्वर को मुखर करने वाले महापुरुषों में उनका नाम अत्यंत आदर के साथ लिया जाता है। दीनदयाल जी का जन्म 25 सितंबर, 1916 को मथुरा के नगला चंद्रभान में हुआ था। बचपन में ही माता-पिता का साया उठ जाने के बावजूद उन्होंने अत्यंत प्रतिकूल परिस्थितियों में अपनी शिक्षा पूर्ण की। वे विलक्षण प्रतिभा के धनी थे; हाईस्कूल और इंटरमीडिएट की परीक्षाओं में उन्होंने न केवल प्रथम स्थान प्राप्त किया, बल्कि स्वर्ण पदक और अनेक प्रतिष्ठित छात्रवृत्तियां भी जीतीं। उन्होंने सिविल सेवा परीक्षा भी उत्तीर्ण की, किंतु आम जनता की सेवा के संकल्प के कारण उस प्रतिष्ठित पद का परित्याग कर दिया। दीनदयाल उपाध्याय का मानना था कि पत्रकारिता अर्थोपार्जन का साधन नहीं, बल्कि एक 'मिशन' है। उन्होंने जनमत निर्माण और राष्ट्रवाद के विचारों को जन-जन तक पहुंचाने के लिए पत्रकारिता को सशक्त माध्यम बनाया। उन्होंने 'एकात्म मानववाद' के दर्शन को प्रतिपादित किया और गांधीवादी चिंतन को पुनर्व्याख्यायित करते हुए 'अंत्योदय' (समाज के अंतिम व्यक्ति का उदय) का विचार दिया। 1947 में उन्होंने 'राष्ट्रधर्म प्रकाशन' की स्थापना की, जिसके अंतर्गत 'स्वदेश', 'राष्ट्रधर्म' और 'पांचजन्य' जैसे पत्रों का प्रकाशन प्रारंभ हुआ। इन प्रकाशनों के माध्यम से उन्होंने उस समय की आयातित विचारधाराओं समाजवाद और साम्यवाद के विरुद्ध भारतीय जीवन मूल्यों पर आधारित एक सशक्त वैचारिक विकल्प प्रस्तुत किया। दीनदयाल जी के अनुसार, राष्ट्र के लिए कार्य करना ही वास्तविक 'धर्म' है। वे भारत विभाजन की विभीषिका से गहरे आहत थे। उनका स्पष्ट मत था कि अखंड भारत केवल एक राजनैतिक नारा नहीं, बल्कि हमारा संपूर्ण जीवन-दर्शन है। अपनी पुस्तिका 'अखंड भारत क्यों?' में उन्होंने उन ऐतिहासिक और सांस्कृतिक परंपराओं का उल्लेख किया जो भौगोलिक भारत को एक एकात्म राष्ट्र के रूप में विकसित करती हैं। उनका मानना था कि नेहरू और जिन्ना की सत्ता-लोलुपता के कारण भारत माता का खंडन हुआ, जिसे बिना विभाजित किए भी आजादी प्राप्त की जा सकती थी। पंडित जी एक प्रभावी संचालक और निष्पक्ष आलोचक थे। उनके लेखों और स्तंभों (जैसे 'पॉलिटिकल डायरी') में सत्यपरक समाचारों और मर्यादित शब्दावली का अद्भुत समन्वय मिलता था। साहित्य के प्रति उनका अनुराग ऐसा था कि उन्होंने एक ही बैठक में 'चंद्रगुप्त' नाटक की रचना कर डाली। वे स्वयं कभी औपचारिक रूप से संपादक नहीं रहे, परंतु पत्रकारों और संपादकों के लिए वे सदैव एक मित्र और मार्गदर्शक बने रहे। पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने पत्रकारिता के जो मानदंड स्थापित किए, वे आज भी अनुकरणीय हैं। उन्होंने दिखाया कि पत्रकारिता कैसे राष्ट्रहित को सर्वोपरि रखकर सामाजिक उत्तरदायित्व निभा सकती है। आज जब मूल्यहीनता और व्यावसायिकता का संकट गहरा रहा है, उपाध्याय जी का पत्रकारीय चिंतन और 'एकात्म मानववाद' का मार्ग न केवल भारत बल्कि पूरे विश्व को शोषण मुक्त समाज की राह दिखा सकता है।

श्री श्याम कृपा उत्सव कल, राज्यपाल ने किया पोस्टर का विमोचन

जयपुर. शाबाश इंडिया

जयपुर सिल्वर एसोसिएशन के प्रथम स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में आगामी 12 फरवरी को 'श्री श्याम कृपा उत्सव' का भव्य आयोजन किया जाएगा। पृथ्वीराज रोड, सेंट्रल पार्क के सामने स्थित बी-5 परिसर में आयोजित होने वाले इस धार्मिक कार्यक्रम के बहुरंगी पोस्टर का विमोचन राज्यपाल हरिभाऊ किसनराव बागड़े ने किया। पोस्टर विमोचन के अवसर पर एसोसिएशन के अध्यक्ष उज्ज्वल डेरेवाला, सचिव राहुल जैन, उपाध्यक्ष अभिषेक बंसल और इनोवेशन सचिव करण बुचरा विशेष रूप से उपस्थित रहे।

भजन संध्या और विशेष आकर्षण

एसोसिएशन के अध्यक्ष ने बताया कि उत्सव के दौरान श्याम बाबा का नयनाभिराम श्रृंगार किया जाएगा। इस अवसर पर इत्र वर्षा, पुष्प वर्षा और बाबा को छप्पन भोग अर्पित किया जाएगा। भक्ति संध्या में अपनी सुरीली आवाज से बाबा को रिझाने के लिए कोलकाता के विश्व विख्यात भजन गायक सौरभ शर्मा, जयपुर के मामराज अग्रवाल, गोविंद शर्मा व महेश परमार सहित अन्य कलाकार भजनों की प्रस्तुतियाँ देंगे। कार्यक्रम का विशेष आकर्षण 'फूलों की होली' और 'चंग धमाल' होगा।

प्रमुख हस्तियां करेंगी शिरकत

इस भव्य आयोजन में राजनीति और समाज सेवा से जुड़ी कई प्रमुख हस्तियां सम्मिलित होंगी। मुख्य अतिथियों में राजस्थान वित्त आयोग के अध्यक्ष डॉ. अरुण चतुर्वेदी, कैबिनेट मंत्री जोरा राम कुमावत एवं के.के. विश्नोई, जयपुर शहर सांसद मंजू शर्मा, विधायक कालीचरण सराफ, गोपाल शर्मा एवं बालमुकुंदाचार्य, भाजपा जयपुर शहर अध्यक्ष अमित गोयल व एनजीजेसीआई के अध्यक्ष प्रमोद डेरेवाला उपस्थित रहेंगे।

विदुषी अरुन्धती भारतीय ज्ञान-परम्परा केन्द्र में छह माह के छात्र-इंटर्नशिप कार्यक्रम के अंतर्गत विशिष्ट व्याख्यान एवं प्रशिक्षण सत्र जारी

नई दिल्ली. शाबाश इंडिया

चाणक्यपुरी स्थित मैत्रेयी महाविद्यालय में स्थापित 'विदुषी अरुन्धती भारतीय ज्ञान-परम्परा केन्द्र' द्वारा संचालित छह माह का छात्र-इंटर्नशिप कार्यक्रम जनवरी 2026 से औपचारिक रूप से प्रारम्भ हो चुका है। यह कार्यक्रम महाविद्यालय की प्राचार्या प्रो. हरित्मा चोपड़ा के निर्देशन एवं मार्गदर्शन, उप-प्राचार्या प्रो. ज्योति सिंह के सहयोग एवं समन्वय तथा दिल्ली विश्वविद्यालय के डिप्टी डीन (स्टूडेंट्स वेलफेयर) एवं केन्द्र के नोडल ऑफिसर डॉ. प्रमोद कुमार सिंह के संयोजन में संचालित किया जा रहा है।

साप्ताहिक व्याख्यान और वैश्विक विमर्श

इस प्रशिक्षण अवधि के अंतर्गत चयनित प्रशिक्षुओं के लिए देश के ख्यातिलब्ध विद्वानों, केन्द्र के संकाय-सदस्यों तथा अमेरिका के 'इंडिक स्टडीज' एवं अंतरविषयी अध्ययन से जुड़े विशेषज्ञों के साप्ताहिक व्याख्यान आयोजित किए जा रहे हैं। इन सत्रों का मुख्य उद्देश्य प्रशिक्षुओं को भारतीय ज्ञान-परम्परा की मूल अवधारणाओं से जोड़ते हुए समकालीन वैश्विक बौद्धिक विमर्श एवं आधुनिक तकनीक के व्यावहारिक ज्ञान से परिचित कराना है। इसी क्रम में 'पश्चिमी और भारतीय साहित्य में मानवीय विविधताओं का अध्ययन' विषय पर प्रतिष्ठित चिकित्सक एवं विचारक डॉ. मैथ्यू बर्गीज का विशेष व्याख्यान आयोजित हुआ। उन्होंने पश्चिमी एवं भारतीय साहित्य के आलोक में मानवीय स्थितियों और विविधताओं का गहन विश्लेषण प्रस्तुत किया।

तकनीकी प्रशिक्षण एवं व्यावहारिक ज्ञान

प्रशिक्षण श्रृंखला के अंतर्गत प्रशिक्षुओं को 'इंटरैक्टिव पैनल' तथा 'ओपन ब्रॉडकास्टर सॉफ़्टवेयर' से संबंधित व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान किया गया। इस तकनीकी सत्र के लिए केन्द्र के तकनीकी पदाधिकारी एवं प्राणि-विज्ञानी डॉ. तेजेन्द्र कुमार को आमंत्रित किया गया। उल्लेखनीय है कि डॉ. तेजेन्द्र कुमार मैत्रेयी महाविद्यालय में प्राणि-विज्ञान के प्राध्यापक हैं और अपने यूट्यूब चैनल के माध्यम से विज्ञान एवं तकनीक के प्रचार-प्रसार में निरंतर योगदान दे रहे हैं। उनकी तकनीकी दक्षता को देखते हुए केन्द्र ने उन्हें 'तकनीकी ज्ञान-विस्तार' का विशेष उत्तरदायित्व सौंपा है।

कार्यक्रम का विवरण

प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारम्भ केन्द्र की प्रशिक्षु छवि द्वारा प्रस्तुत 'सरस्वती-वन्दना' से हुआ। तत्पश्चात नोडल अधिकारी डॉ. प्रमोद कुमार सिंह ने स्वागत वक्तव्य दिया। केन्द्र की उप-निदेशिका प्रो. ज्योति सिंह ने प्रशिक्षुओं का मार्गदर्शन करते हुए आयोजन समिति का उत्साहवर्धन किया। कार्यक्रम का कुशल मंच-संचालन प्रशिक्षु आयना एवं भूमि श्रीवास्तव ने किया। अंत में डॉ. नीलिमा ओहरी ने धन्यवाद ज्ञापन किया तथा डॉ. हेमलता रानी ने सभी वक्ताओं एवं उपस्थित जनों के प्रति आभार व्यक्त किया। उल्लेखनीय है कि यह शैक्षणिक गतिविधियाँ 'काउंसिल ऑफ इंडिक स्टडीज एंड रिसर्च, नई दिल्ली' के सहयोग से संचालित की जा रही हैं। केन्द्र इस कार्यक्रम को भारतीय बौद्धिक परम्परा के संवर्धन और नवाचार की दिशा में एक सशक्त पहल मानता है।

अनेकांत सिद्धांत से संभव है विश्व की समस्याओं का समाधानः डॉ. इन्दु जैन 'राष्ट्र गौरव'

नई दिल्ली. शाबाश इंडिया

दिल्ली के साकेत स्थित डीडीए पार्क में आयोजित 'विशाल हिंदू सम्मेलन' में जैन धर्म के सिद्धांतों और उनके व्यावहारिक प्रयोग की गूंज सुनाई दी। इस सम्मेलन में विभिन्न धर्मों के प्रतिनिधियों ने शिरकत की, जहाँ अल्पसंख्यक आयोग की विशेषज्ञ सलाहकार सदस्य डॉ. इन्दु जैन 'राष्ट्र गौरव' को जैन धर्म की ओर से मुख्य वक्ता के रूप में आमंत्रित किया गया था।

भारत भूमि और ऋषभदेव का ऐतिहासिक संबंध

डॉ. इन्दु जैन ने अपने संबोधन का प्रारंभ स्कंद पुराण के श्लोक के माध्यम से भारत की ऐतिहासिक जड़ों को नमन करते हुए किया। उन्होंने स्पष्ट किया कि भगवान ऋषभदेव के पुत्र भरत के नाम पर ही इस पुण्य भूमि का नाम 'भारत' पड़ा। उन्होंने कर्मभूमि के प्रारंभ में राजा ऋषभदेव द्वारा प्रजा को सिखाए गए छह कर्मों– असि, मसि, कृषि, विद्या, शिल्प और वाणिज्य का उल्लेख करते हुए कहा कि ये सिद्धांत आज भी श्रेष्ठ जीवन जीने की कला सिखाते हैं।

ब्राह्मी लिपि और अंक विद्या का गौरव

डॉ. जैन ने ज्ञान की परंपरा पर प्रकाश डालते हुए बताया कि ऋषभदेव ने अपनी पुत्री ब्राह्मी को अक्षर विद्या दी, जिससे सभी लिपियों की जननी 'ब्राह्मी लिपि' का जन्म हुआ। वहीं, पुत्री सुंदरी को अंक विद्या सिखाई, जिससे विश्व में गणित का विकास संभव हुआ।

अनेकांतवादः वैश्विक शांति का मार्ग

अपने वक्तव्य में उन्होंने जैन धर्म के अनेकांत, स्याद्वाद, नयवाद और अणुव्रत जैसे सिद्धांतों की विस्तार से व्याख्या की। डॉ. जैन ने जोर देकर कहाः अनेकांत के सिद्धांत (एक ही सत्य को विभिन्न दृष्टिकोणों से देखना) को अपनाने से ही समाज में आपसी सौहार्द और सहिष्णुता का विकास संभव है। वर्तमान समय में विश्व शांति के लिए यह सिद्धांत एकमात्र समाधान है। उन्होंने चौबीस तीर्थंकरों के उपदेशों और प्राकृत भाषा की गाथाओं के माध्यम से अहिंसा की मार्मिक व्याख्या करते हुए अपना वक्तव्य पूर्ण किया।

गरिमामयी उपस्थिति

कार्यक्रम का कुशल संचालन श्रीमती लालिमा ने किया। इस भव्य सम्मेलन में हिंदू सम्मेलन समिति (साकेत) के अध्यक्ष ब्रिगेडियर अमूल अस्थाना, संयोजक संजीव वेडेकर सहित संघ के वरिष्ठ पदाधिकारी, विभिन्न धर्मों के प्रतिनिधि और हजारों की संख्या में क्षेत्रवासी उपस्थित थे।

नांदिया में शिक्षक गुरुदीन वर्मा ने विद्यालय को पोषाहार की थालियां भेंट कीं

पिंडवाड़ा. शाबाश इंडिया। ब्लॉक पिंडवाड़ा के निकटवर्ती नांदिया गांव स्थित राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में शनिवार, 7 फरवरी 2026 को आयोजित वार्षिकोत्सव कार्यक्रम के अवसर पर विद्यालय के शिक्षक गुरुदीन वर्मा ने पोषाहार की 50 थालियां भेंट कीं। श्री वर्मा ने जानकारी देते हुए बताया कि उन्होंने कक्षा 6 से 8 तक के विद्यार्थियों के लिए यह 50 थालियां विद्यालय के प्रधानाचार्य देवेश कुमार खत्री को सुपुर्द कीं। कार्यक्रम में उन्हें भामाशाह के रूप में आमंत्रित कर सम्मानित भी किया गया। संस्था प्रधान ने उनके इस सराहनीय कार्य की प्रशंसा करते हुए विद्यालय परिवार की ओर से आभार व्यक्त किया तथा उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। उल्लेखनीय है कि इससे पूर्व भी श्री वर्मा प्राथमिक परिसर में कक्षा 1 से 5 तक के विद्यार्थियों हेतु 75 पोषाहार थालियां भेंट कर चुके हैं। भामाशाह के रूप में वे अब तक विद्यालय को पंखे, कुर्सियां, स्मार्ट टीवी, डिजिटल घड़ी एवं पोषाहार थालियां प्रदान कर चुके हैं। गत वर्ष उन्होंने प्राथमिक परिसर के बरामदे और हॉल का रंग-रोगन भी करवाया था। उनके इस योगदान के लिए 15 अगस्त 2024 को उन्हें ब्लॉक स्तर पर सम्मानित किया गया था।

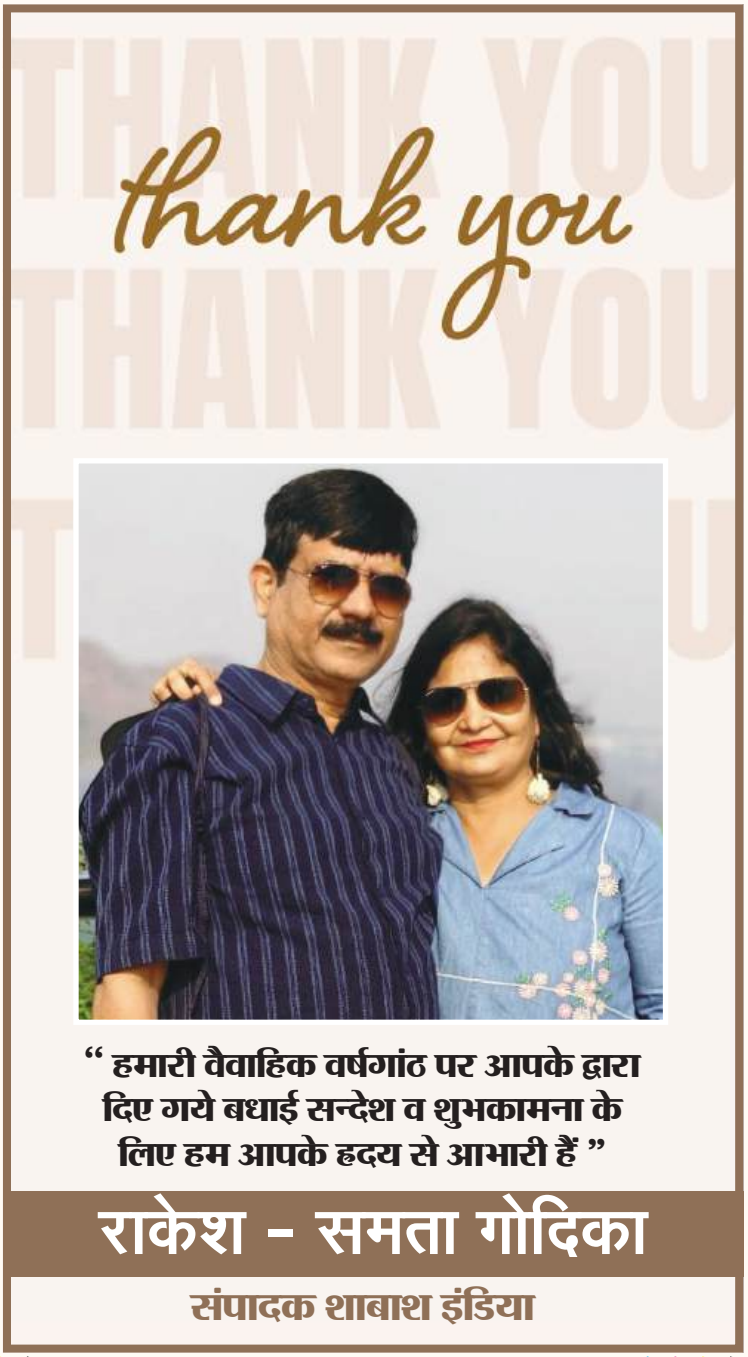

" हमारी वैवाहिक वर्षगांठ पर आपके द्वारा दिए गये बधाई सन्देश व शुभकामना के लिए हम आपके हृदय से आभारी हैं "

राकेश - समता गोदिका

संपादक शाबाश इंडिया

JAIPUR
CHAMPIONS LEAGUE
OVERARM CRICKET TOURNAMENT
7th & 8th March 2026
Venue: Kesar Ground Jaipur
Registration Fees: Rs. 21,000/-
Winners Prize: Rs. 41,000/-
Runners Up: Rs. 31,000/-
For Registrations Contact:
Mr. Nayan Jain - 9828300812
Mr. Gaurav Jain - 9983330980

फागी सहित परिक्षेत्र के जिनालयों में भगवान पुष्पदंत का गर्भ कल्याणक महोत्सव हर्षोल्लास से मनाया गया

फागी. शाबाश इंडिया

फागी कस्बे सहित परिक्षेत्र के चकवाड़ा, चोरू, नारेड़ा, मंडावरी, मेहंदवास, निमेड़ा, लसाड़िया एवं लदाना सहित विभिन्न गांवों के जिनालयों में जैन धर्म के नौवें तीर्थंकर पुष्पदंत भगवान का गर्भ कल्याणक महोत्सव श्रद्धा एवं उत्साह के साथ मनाया गया। जैन महासभा के प्रतिनिधि राजाबाबू गोधा ने जानकारी देते हुए बताया कि कस्बे के श्री चंद्रप्रभु नसियां जी में प्रातःकाल श्रीजी का अभिषेक एवं शांतिधारा की गई। इसके पश्चात अष्टद्रव्यों से विधिवत पूजा-अर्चना संपन्न हुई। कार्यक्रम के दौरान आचार्य वर्धमान सागर, आचार्य सुनील सागर, गुणसागर जी महाराज, आर्यिका आदिमति माताजी एवं गौरव मति माताजी सहित जिनवाणी माता, चौबीस तीर्थंकरों एवं विभिन्न पूर्वाचार्यों को अर्घ्य अर्पित किए गए। इसके पश्चात भगवान पुष्पदंत के गर्भ कल्याणक महोत्सव पर जयकारों के साथ विशेष अर्घ्य चढ़ाया गया तथा विश्व में सुख-समृद्धि एवं खुशहाली की मंगलकामना की गई। कार्यक्रम में कन्हैयालाल सिंघल, पारस नला, रमेश जैन बावड़ी, महेश बावड़ी, राजाबाबू गोधा सहित समाज की वयोवृद्ध महिलाएं रतनी देवी सिंघल, संतोष बावड़ी, सुरज्ञानी देवी कठमाना, सुशीला देवी गर्ग, मुन्नी देवी सिंघल, मैना जैन बावड़ी, मंजू गर्ग, संजू गर्ग बावड़ी, सुनीता कठमाना, ममता बावड़ी, नैना गर्ग, रूपल जैन, रुचि जैन, संजू बावड़ी, लीला गर्ग, शिखा बावड़ी, प्रिया जैन सहित बड़ी संख्या में श्रावक-श्राविकाएं उपस्थित रहीं।

राजाबाबू गोधा
मीडिया प्रवक्ता, जैन महासभा, राजस्थान

आपके विचार

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक राकेश जैन गोदिका द्वारा प्रकाशित दैनिक-ईपेपर **'शाबाश इंडिया'** आम पाठक और समाज में जागरूकता फैलाने में सेतू का काम कर रहा है। आप अपने क्षेत्र के समाचार, आलेख, विचार आदि ई-मेल कर सकते हैं या निम्न नंबरों पर वाट्सअप कर सकते हैं।

सम्पादकः राकेश जैन गोदिका
@ 94140 78380, 92140 78380

दैनिक ई-पेपर
शाबाश इंडिया
shabaasindia@gmail.com | weeklyshabaas@gmail.com

वायु गुणवत्ता सूचकांक से भी अधिक घातक है 'डिजिटल प्रदूषण': प्रभुनाथ शाही

चंडीगढ़/जयपुर. शाबाश इंडिया। महावीर इंटरनेशनल द्वारा ''पर्यावरण संरक्षण एवं प्लास्टिक कचरा प्रबंधन'' पर आयोजित एक विशेष अंतरजाल संगोष्ठी (वेबिनार) में विशेषज्ञों ने प्रकृति के प्रति बढ़ते खतरों पर गहरी चिंता व्यक्त की। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता, भारतीय वायुसेना के सेवानिवृत्त उड़ान अभियंता और 'फौजी पौधेवाला' के नाम से प्रसिद्ध प्रभुनाथ शाही ने कहा कि वर्तमान में बढ़ते वायु गुणवत्ता सूचकांक से भी अधिक खतरनाक 'डिजिटल प्रदूषण' है, जिसके प्रति समाज को सचेत होने की आवश्यकता है।

पौधे से पेड़ बनने की '5-प' रणनीति

अजीत कोठिया (अंतरराष्ट्रीय निदेशक, ज्ञान साझाकरण एवं ई-चौपाल) के संयोजन में आयोजित इस संगोष्ठी को संबोधित करते हुए शाही ने 'पौधा लगाओ, पेड़ बनाओ' का नारा दिया। उन्होंने किसी भी पौधारोपण अभियान की सफलता के लिए '5-प' का सिद्धांत साझा किया: परिकल्पना (प्लानिंग), प्रस्तुति (प्रिपरेशन), प्रतिभागिता (पार्टिसिपेशन), पौधारोपण (प्लांटेशन), परिरक्षण (प्रोटेक्शन)

उन्होंने जोर देकर कहा कि जब तक हमारी कथनी और करनी में एकरूपता नहीं होगी, तब तक पर्यावरण को बचाना संभव नहीं है। पर्यावरण दरबार और वृक्ष उपचार वाहन जैसे अनूठे नवाचार प्रभुनाथ शाही ने समाज को जागरूक करने के लिए अपने द्वारा शुरू किए गए कई क्रांतिकारी प्रकल्पों की चर्चा की। इनमें पर्यावरण दरबार, पर्यावरण संसद, वृक्ष उपचार वाहन (ट्री एंबुलेंस), पौधों का अस्पताल, पर्यावरण चौपाल और पर्यावरण पाठशाला प्रमुख हैं। ये नवाचार न केवल लोगों को सचेत कर रहे हैं, बल्कि पर्यावरण संरक्षण की दिशा में धरातल पर कार्य कर रहे हैं।

|| श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय नमः||

पद्मपुरा

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव

दिनांक 18 से 22 फरवरी 2026

श्री मज्जिनेन्द्र पंचकल्याणक प्रतिष्ठा नवनिर्मित खड्गासन चौबीसी

एवं

पद्मबल्लभ शिखर कलश - ध्वजारोहण महामहोत्सव

श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र
पद्मपुरा (बाड़ा) जयपुर, राजस्थान

: पावन सान्निध्य :
वात्सल्य वारिधि
पंचम पट्टाचार्य 108 श्री वर्धमानसागर जी महाराज
ससंघ

: पावन सान्निध्य :
वात्सल्य वारिधि पंचम पट्टाचार्य 108 श्री वर्धमानसागर जी महाराज ससंघ

: पावन प्रेरणा :
गणिनी आर्यिका 105 श्री स्वस्तिभूषण माताजी ससंघ

प्रतिष्ठाचार्य : पं. हँसमुख जी जैन (धरियावद) राज.

: पावन प्रेरणा :
गणिनी आर्यिका
105 श्री स्वस्ति भूषण माताजी
ससंघ

पधारो पद्मपुरा बाड़ा

जहां धर्म की ज्योति प्रज्ज्वलित होती है

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव में इन्द्र एवं अन्य पात्र बनने के लिए सम्पर्क करें।

| सुधीर कुमार जैन 'एडवोकेट' 94140 50432 | हेमन्त सौगानी 'एडवोकेट' 98290 64506 | राजकुमार कोठ्यारी 94140 48432 |

निवेदक

पद्मपुरा पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव समिति

अन्तर्गत : प्रबन्ध समिति, श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र पद्मपुरा (बाड़ा), जयपुर, राजस्थान

सकल दिगम्बर जैन समाज पद्मपुरा एवं जयपुर (राजस्थान)

महोत्सव कार्यालय : एच-24, चितरंजन मार्ग, सी-स्कीम, जयपुर 302 001 | मोबाईल नम्बर : 94140 48432, 98290 64506
क्षेत्रीय कार्यालय : बाड़ा पदमपुरा जयपुर 303 903 | मोबाईल नम्बर : 90579 03365

राजवंश पब्लिक स्कूल में विदाई समारोह एवं हवन का आयोजन

विद्यार्थियों को दी गई सफलता की शुभकामनाएँ

जयपुर. शाबाश इंडिया

बरकत नगर स्थित राजवंश पब्लिक स्कूल में कक्षा 12वीं के विद्यार्थियों के लिए विदाई समारोह और 10वीं व 12वीं के छात्रों के उत्कृष्ट परीक्षा परिणाम हेतु 'शुभकामना हवन' का भव्य आयोजन किया गया।

हवन और आध्यात्मिक मार्गदर्शन

विद्यालय परिसर में आयोजित इस हवन का संपादन पंडित जानकी प्रसाद के कुशल मार्गदर्शन में संपन्न हुआ। मंत्रोच्चारण के बीच आयोजित इस आहुति कार्यक्रम में विद्यालय के सभी अध्यापक-अध्यापिकाओं और छात्र-छात्राओं ने पूर्ण श्रद्धा के साथ भाग लिया। इस धार्मिक अनुष्ठान का मुख्य उद्देश्य बोर्ड परीक्षाओं में बैठने वाले विद्यार्थियों के आत्मविश्वास को बढ़ाना और उनके बेहतर भविष्य की कामना करना था।

मार्गदर्शक उद्बोधन और सफलता के मंत्र

संस्था की निदेशक श्रीमती सीता चौहान ने सभी विद्यार्थियों को उनके उज्ज्वल भविष्य का आशीर्वाद देते हुए उत्कृष्ट परीक्षा परिणाम प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने कहा कि कठिन परिश्रम और सकारात्मक सोच ही सफलता की कुंजी है। संस्था के सचिव श्री अनिमेष चौहान ने छात्रों को संबोधित करते हुए परीक्षा की तैयारी से जुड़े महत्वपूर्ण सुझाव (टिप्स) साझा किए। उन्होंने समय प्रबंधन और तनाव मुक्त होकर परीक्षा देने के गुर सिखाए, जिससे विद्यार्थी अपने प्रदर्शन को बेहतर बना सकें।

आभार प्रदर्शन

कार्यक्रम के अंत में स्कूल के प्रधानाचार्य नवल जैन ने सभी पधारे हुए अतिथियों का स्वागत किया और कार्यक्रम की गरिमा बढ़ाने के लिए उनका आभार व्यक्त किया। समारोह का समापन विद्यार्थियों के लिए विदाई भोज और मंगलकामनाओं के साथ हुआ।

धावास जैन समाज का 22 सदस्यीय दल गिरनार जी यात्रा से लौटा, समाजजनों ने किया भव्य स्वागत

जयपुर. शाबाश इंडिया

धावास जैन समाज समिति के संरक्षक जय कुमार जैन बड़जात्या, अध्यक्ष सुरेन्द्र कुमार बैद एवं कोषाध्यक्ष हैमेन्द्र लुहाड़िया के संयुक्त नेतृत्व में 22 सदस्यों का दल तीर्थ क्षेत्र गिरनार पर्वत की वंदना कर 10 फरवरी को जयपुर लौटा। यात्रियों ने भगवान शांतिनाथ भगवान के पावन आशीर्वाद के साथ-साथ पूज्य आचार्य 108 सुनील सागर महाराज का भी आशीर्वाद प्राप्त किया। जयपुर पहुंचने पर सभी यात्री रेलवे स्टेशन से सीधे श्री 1008 शांतिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, धावास पहुंचे, जहां समिति के मंत्री मितेश ठोलिया, सहमंत्री नरेंद्र गोधा सहित नेमीचंद जैन, पारसमल एवं विनीत सोनी सहित वरिष्ठ समाजबंधुओं ने तिलक, दुपट्टा एवं माला पहनाकर तथा ढोल-बाजों के साथ भव्य स्वागत किया। महिला यात्रियों की अगवानी अल्पना ठोलिया, सीमा बड़जात्या, शिमला, नीतू गर्ग, सीमा गोधा, लेखा जैन एवं अन्य महिलाओं ने पारंपरिक रीति से तिलक व माल्यार्पण कर की। संरक्षक जय कुमार जैन बड़जात्या ने बताया कि यात्रा के दौरान आचार्य 108 सुनील सागर महाराज को आगामी वर्ष 2027 के पावन चातुर्मास एवं आचार्य श्री के 50वें अवतरण दिवस को गुलाबी नगरी जयपुर में, धावास की पावन धरा पर आयोजित करने हेतु श्रीफल भेंट कर आशीर्वाद प्राप्त किया गया। साथ ही निमार्णाधीन मंदिर की प्रगति से अवगत कराते हुए आगामी रूपरेखा पर विशेष चर्चा भी की गई। मंत्री मितेश ठोलिया ने सफल एवं निर्विघ्न यात्रा के लिए सभी यात्रियों और आयोजकों को बधाई देते हुए इस पुण्य कार्य की सराहना की।

ऊँची मुंडेर पर बैठकर कौआ मोर नहीं बन जाता

नितिन जैन. शाबाश इंडिया

ऊँची दीवार पर बैठ जाना, ऊँचे मंच पर दिखाई दे जाना या किसी प्रभावशाली कुर्सी पर आसीन हो जाना—इनसे किसी व्यक्ति की वास्तविक पहचान नहीं बदलती। कौआ चाहे जितनी भी ऊँची मुंडेर पर बैठ जाए, उसकी वाणी, उसकी दृष्टि और उसकी उड़ान वही रहती है। मोर बनने के लिए केवल ऊँचाई नहीं, बल्कि भीतर की सुंदरता, आचरण की गरिमा और स्वभाव की शालीनता आवश्यक है। आज समाज में एक खतरनाक भ्रम पनप रहा है—दिखावा ही योग्यता है, शोर ही प्रभाव है और भीड़ ही सत्य का प्रमाण। थोड़ी-सी प्रशंसा, कुछ मंचीय तालियाँ और सीमित अनुयायियों का समर्थन मिलते ही कुछ लोग स्वयं को असाधारण समझने लगते हैं। वे भूल जाते हैं कि वास्तविक ऊँचाई प्रचार से नहीं, परिश्रम से बनती है; पद से नहीं, पात्रता से पहचानी जाती है; और शब्दों से नहीं, आचरण से सिद्ध होती है। भीतर से खोखला व्यक्ति बाहरी ऊँचाई का सहारा लेकर अधिक समय तक टिक नहीं पाता—समय की कसौटी पर नकली पंख झड़ ही जाते हैं और सत्य स्वतः उजागर हो जाता है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में यह स्थिति जैन समाज के कुछ साधुओं के संदर्भ में भी चिंतन का विषय प्रतीत होती है। जैन धर्म की परंपरा त्याग, संयम, विनय, निर्लोभता और आत्मशुद्धि पर आधारित रही है। किंतु जब साधुता का मूल्यांकन वेश, मंच, प्रभाव या अनुयायियों की संख्या से होने लगे, तब मूल भावना क्षीण होने लगती है। साधना से अधिक प्रदर्शन, मौन से अधिक भाषण और आत्मसंयम से अधिक सामाजिक प्रभाव को महत्व मिलने लगे तो संतुलन डगमगाने लगता है। सच्ची साधुता बिना शोर, बिना प्रचार और बिना अपेक्षा के आत्मविजय की सतत प्रक्रिया है। जहाँ साधु का जीवन सुविधा, प्रभाव या दबाव के समीकरणों में उलझने लगे, वहाँ वेश भले रह जाए, किंतु साधुता का तेज धीरे-धीरे मंद पड़ने लगता है। इस स्थिति के लिए केवल साधु ही नहीं, समाज भी कम उत्तरदायी नहीं है। जब समाज प्रश्न पूछने के बजाय आँख मूँदकर स्वीकार करे, विवेक के स्थान पर भावुकता को प्रधानता दे और आचरण की कसौटी छोड़ मंच की ऊँचाई से प्रभावित हो जाए, तब भ्रम और गहराता है। परिणामस्वरूप ऊँची मुंडेर पर बैठे कुछ लोग स्वयं को मोर समझने लगते हैं, जबकि वास्तविक तपस्वी—शांत, विनम्र और संयमी—भीड़ और शोर में ओझल हो जाते हैं। आवश्यकता है कि श्रद्धा को विवेक से जोड़ा जाए, वेश के साथ आचरण को परखा जाए और पद के साथ पात्रता को देखा जाए। जैन धर्म की गरिमा तभी सुरक्षित रह सकती है जब साधु और समाज दोनों आत्ममंथन करें, दिखावे से दूरी बनाएं और मूल सिद्धांतों की ओर लौटें। क्योंकि महानता मुंडेर की ऊँचाई से नहीं, कर्म की सच्चाई से सिद्ध होती है—और कौआ चाहे जहाँ बैठे, मोर नहीं बन जाता।

श्री पार्श्वनाथ महिला मण्डल के चुनाव निर्विरोध सम्पन्न

भंवरी देवी जैन बनीं अध्यक्ष

जयपुर. शाबाश इंडिया

थड़ी मार्केट, अग्रवाल फार्म स्थित श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में श्री पार्श्वनाथ महिला मण्डल की नई कार्यकारिणी के चुनाव निर्विरोध सम्पन्न हुए। समाज की एकता और शुचिता को दशार्ते हुए सभी पदाधिकारियों का चयन सर्वसम्मति से किया गया।

गरिमामयी उपस्थिति

निर्वाचन प्रक्रिया के दौरान श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर समिति के अध्यक्ष श्री सुमति चंद जी जैन, श्री पवन जी नगीने वाले, नवयुवक मंडल के अध्यक्ष श्री सिद्ध सेठी और मंत्री श्री मनीष जैन विशेष रूप से उपस्थित रहे। उनकी देखरेख में नई कार्यकारिणी की घोषणा की गई।

नई कार्यकारिणी का स्वरूप

महिला मण्डल की नवनिर्वाचित कार्यकारिणी में निम्नलिखित सदस्यों को दायित्व सौंपे गए हैं:

अध्यक्षः श्रीमती भंवरी देवी जैन
उपाध्यक्षः श्रीमती मीना सेठी
महामंत्रीः श्रीमती नीता जैन
उप मंत्रीः श्रीमती निर्मला जैन
कोषाध्यक्षः श्रीमती नीलम जैन
सांस्कृतिक मंत्रीः उर्मिला जैन एवं मीनाक्षी जैन
धार्मिक मंत्रीः सविता जैन एवं रीना जैन
संगठन मंत्रीः सुनीता जैन एवं संगीता बाकलीवाल
सलाहकार मंत्रीः कांता जैन एवं ममता बज
प्रचार मंत्रीः तारा देवी बाकलीवाल एवं संगीता गोधा
कार्यकारी सदस्यः प्रज्ञा जैन, बरखा जैन, ममता बाकलीवाल, मीनू जैन एवं संगीता जैन।

सेवा का संकल्प

नवनियुक्त पदाधिकारियों का समाज के वरिष्ठ पदाधिकारियों द्वारा माला पहनाकर स्वागत किया गया। सभी नवनिर्वाचित सदस्यों ने पूर्ण निष्ठा और सेवा भाव के साथ महिला मण्डल के कार्यों को आगे बढ़ाने और धार्मिक गतिविधियों को गति देने का संकल्प लिया।

॥ वैवाहिक वर्षगांठ की हार्दिक मंगलकामनाएं ॥

"एक-दूसरे के प्रति सम्मान और अटूट प्रेम का यह बंधन सदैव बना रहे।"

दिगंबर जैन महासमिति महिला अंचल, चाकसू की कर्मठ कार्यकर्ता एवं हमारी सम्मानीय संरक्षिका

श्रीमती उषा जी एवं श्री अशोक जी

को उनकी वैवाहिक वर्षगांठ के इस पावन अवसर पर हम सभी की ओर से अनंत शुभकामनाएं और हार्दिक बधाई! भगवान महावीर का आशीर्वाद आप दोनों पर सदैव बना रहे और आप सुखद, आरोग्य एवं मंगलमय दाम्पत्य जीवन व्यतीत करें।

शुभकामना प्रेषक:
शकुंतला जैन बिंदायका (अध्यक्ष, राजस्थान महिला अंचल)
सुनीता गंगवाल (सचिव), उर्मिला जैन (कोषाध्यक्ष)
ऋचिका जैन (अध्यक्ष), रिंकल सोगानी (मंत्री)
एवं समस्त सदस्य, दिगम्बर जैन महासमिति महिला अंचल, राजस्थान (जयपुर)

रिलायंस फाउंडेशन के समृद्ध भविष्य का निर्माण सम्मेलन में छात्रों के भविष्य पर मंथन

बच्चे तभी प्रगति करते हैं जब वे स्वयं को सुरक्षित अनुभव करते हैं: ईशा अंबानी

भारत और विश्वभर के 250 से अधिक शिक्षा विशेषज्ञों ने साझा किए विचार

मुंबई. शाबाश इंडिया

रिलायंस फाउंडेशन के दो दिवसीय सम्मेलन समृद्ध भविष्य का निर्माण (बिल्डिंग फ्लोरिशिंग फ्यूचर्स) में बच्चों के शुरूआती वर्षों को उनके समग्र विकास के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण बताया गया है। इस अवसर पर रिलायंस फाउंडेशन की निदेशक ईशा अंबानी ने बाल मनोविज्ञान और समावेशी शिक्षा पर अपने विचार साझा किए। सम्मेलन को संबोधित करते हुए ईशा अंबानी ने कहा, शिक्षा तभी प्रभावी और सार्थक बनती है जब वह बच्चों की भावनात्मक, सामाजिक और बौद्धिक आवश्यकताओं के अनुरूप हो। रिलायंस फाउंडेशन का दृढ़ विश्वास है कि बच्चे तभी उन्नति करते हैं जब वे स्वयं को सुरक्षित, स्नेहपूर्ण और सम्मानित परिवेश में पाते हैं। हमारा ध्यान एक ऐसी समावेशी शिक्षा प्रणाली के निर्माण पर है, जहाँ प्रत्येक छात्र अपनी पूरी क्षमता को पहचान सके और उसे निखार सके। इस अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में भारत सहित विदेशों से आए 250 से अधिक शिक्षाविदों ने हिस्सा लिया। विशेषज्ञों ने प्रारंभिक और प्राथमिक शिक्षा में नवाचार, खेल-आधारित शिक्षण पद्धति, बुनियादी साक्षरता और शिक्षा के क्षेत्र में कृत्रिम बुद्धिमत्ता के बढ़ते प्रभाव पर गहन चर्चा की। इस अवसर पर खेल की शिक्षण पद्धति नामक एक विशेष प्रकाशन का भी विमोचन किया गया। यह शोध-पत्र बच्चों के लिए सीखने के नवीन और प्रभावी तरीकों को रेखांकित करता है, जिससे शिक्षण प्रक्रिया को अधिक रोचक और परिणामोन्मुखी बनाया जा सके। सम्मेलन का निष्कर्ष रहा कि बच्चों के प्रारंभिक विकास में निवेश ही एक सशक्त राष्ट्र की नींव रखता है।

गुरुग्राम में प्रथम "कॉमिक कॉन" की दस्तक

गुरुग्राम. शाबाश इंडिया

लोक-संस्कृति और कल्पित पात्रों के प्रशंसकों के लिए शहर अपने पहले भव्य आयोजन की मेजबानी हेतु तैयार है। इस बहुप्रतीक्षित उत्सव से पूर्व, आयोजकों ने सेक्टर 30 स्थित एक सभागार में विशेष ''भेष-सज्जा 101'' (कॉसप्ले) कार्यशाला का आयोजन किया। इसमें दिल्ली-एनसीआर के 100 से अधिक उत्साही युवाओं और रचनाकारों ने भाग लिया। कार्यशाला का मार्गदर्शन राष्ट्रीय भेष-सज्जा प्रतियोगिता के विजेता अक्षय चूरी और अनुभवी कलाकार जानवी नेगी ने किया। प्रतिभागियों को पात्रों के चयन से लेकर उनके विशिष्ट परिधानों को जीवंत बनाने की तकनीकी बारीकियों—जैसे सांचा निर्माण, विग सज्जा, विशेष रूप-सज्जा और टिकाऊ सामग्रियों के उपयोग—का व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया गया। अक्षय चूरी ने बताया, 'प्रतिभागियों की जिज्ञासा और ऊर्जा अद्भुत थी। हमने साधारण सामग्री को पेशेवर वेशभूषा में बदलने की पूरी प्रक्रिया साझा की है।' यह कार्यशाला स्थानीय कलाकारों को अपनी रचनात्मकता प्रदर्शित करने और आगामी राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं के लिए तैयार करने का एक सशक्त मंच सिद्ध हुई। गुरुग्राम कॉमिक कॉन का मुख्य आयोजन 14-15 मार्च, 2026 को होगा। यह प्रयास न केवल शहर के उभरते सांस्कृतिक परिवेश को मजबूती देगा, बल्कि राष्ट्रीय पटल पर गुरुग्राम की पहचान को भी और सशक्त करेगा।

डीपी ज्वैलर्स का अजमेर में "वेडिंग कार्निवल 2026" का भव्य शुभारंभ

DP
D.P. Jewellers
A BOND OF TRUST SINCE 1940
A VENTURE OF D.P. ABHUSHAN LIMITED

अजमेर. शाबाश इंडिया। मध्य भारत के प्रतिष्ठित और भरोसेमंद आभूषण ब्रांड डीपी ज्वैलर्स ने शादी के आगामी सीजन को देखते हुए अजमेर में ''डीपी वेडिंग कार्निवल 2026'' का आयोजन किया है। ब्राइडल ज्वेलरी की यह विशेष प्रदर्शनी 9 फरवरी से शुरू हो चुकी है, जो 22 फरवरी 2026 तक निरंतर जारी रहेगी। इस कार्निवल का मुख्य उद्देश्य विवाह वाले परिवारों को एक ही छत के नीचे आभूषणों के उत्कृष्ट और विशाल विकल्प उपलब्ध कराना है।

विशेष कलेक्शन और डिजाइन

इस प्रदर्शनी में ब्राइडल और सेमी-ब्राइडल ज्वेलरी का अनूठा संग्रह पेश किया गया है। इसमें जहां एक ओर राजसी पारंपरिक डिजाइनों की झलक है, वहीं दूसरी ओर आधुनिक दौर की पसंद के अनुरूप समकालीन स्टाइल भी शामिल हैं। विशेष रूप से: **हॉलमार्क गोल्ड ज्वेलरी:** शुद्धता की पूरी गारंटी के साथ। **नेचुरल डायमंड व पोल्की कलेक्शन:** शाही लुक के लिए विशेष रूप से तैयार। **सिल्वर व मॉडर्न डिजाइन:** हर उत्सव के अनुकूल।

हर अवसर के लिए खास आभूषण

ज्वेलरी को विवाह के विभिन्न कार्यक्रमों सगाई, हल्दी, संगीत, मुख्य विवाह समारोह और रिसेप्शन की थीम के अनुसार वर्गीकृत किया गया है। ग्राहकों की सुविधा के लिए यहाँ विशेषज्ञ उपलब्ध हैं, जो आभूषणों के चयन और निवेश के बारे में मार्गदर्शन प्रदान कर रहे हैं। पारदर्शिता बनाए रखने के लिए मेकिंग चार्जेस और मूल्य निर्धारण को अत्यंत स्पष्ट रखा गया है।

अंतर्मना आचार्य प्रसन्न सागर महाराज का पदमपुरा से मंगल विहार, गुरुवार को होगा निवाई में भव्य प्रवेश

चाकसू के आदिश्वर धाम पहुँचे आचार्य ससंघ

पदमपुरा में चार संघों के मिलन और विदाई का दृश्य देख भावुक हुए श्रद्धालु

पदमपुरा/चाकसू. शाबाश इंडिया

भगवान महावीर के बाद उत्कृष्ट सिंहनिष्क्रीडित व्रत साधना और सम्मेद शिखर जी के स्वर्णभद्र कूट पर 557 दिनों की मौन साधना करने वाले साधना महोदधि अंतर्मना आचार्य 108 प्रसन्न सागर महाराज ससंघ का मंगलवार को दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र पदमपुरा से चाकसू के लिए मंगल विहार हुआ। जयकारों के बीच हुए इस विहार में बड़ी संख्या में श्रद्धालु गुरु भक्ति के लिए उमड़ पड़े।

भावुक कर देने वाला दृश्यः चार संघों का विदाई समारोह

पदमपुरा कमेटी के अध्यक्ष सुधीर जैन और मानद मंत्री हेमंत सोगानी ने बताया कि विहार के अवसर पर पदमपुरा में प्रवासरत आचार्य वर्धमान सागर महाराज के मुनि संघ व आर्यिका संघ, आचार्य प्रज्ञा सागर महाराज और गणिनी आर्यिका 105 स्वस्तिभूषण माताजी ने आचार्य संघ को भावभीनी विदाई दी। चारों संघों के बिछुड़ने और एक-दूसरे को नमन करने का दृश्य देख उपस्थित जनसमूह भावुक हो उठा।

चाकसू में भव्य अगवानी और मंगल प्रवेश

आचार्य संघ शिवदासपुरा होते हुए चाकसू के आदिश्वर धाम पहुँचा, जहाँ बैंड-बाजों और जुलूस के साथ भव्य मंगल प्रवेश हुआ। इससे पूर्व मार्ग में पदम ज्योति नेत्र चिकित्सालय के बाहर डॉ. नरेश मेहता, राजस्थान जैन सभा के उपाध्यक्ष विनोद जैन कोटखावदा और जगतपुरा समाज के अध्यक्ष कमल वैद ने संघ की अगवानी की। आदिश्वर धाम पहुँचने पर अध्यक्ष प्रवीण शाह के नेतृत्व में गुरुदेव की आरती कर अगवानी की गई।

साधना और धर्म सभा

विहार से पूर्व पदमपुरा में प्रातः 4 बजे से ही अनुष्ठान प्रारंभ हुए। श्रद्धालुओं ने भगवान पदमप्रभु का अभिषेक और शांतिधारा कर विश्व शांति की कामना की। आयोजित धर्म सभा में आचार्य वर्धमान सागर, आचार्य प्रज्ञा सागर, आचार्य प्रसन्न सागर और आर्यिका स्वस्तिभूषण माताजी के मंगल प्रवचन हुए। आचार्यों ने कहा कि श्रद्धा और समर्पण के साथ की गई प्रभु भक्ति से मनुष्य का लोक और परलोक दोनों सुधरते हैं।

आगामी कार्यक्रम की रूपरेखा

प्रचार-प्रसार संयोजक सुरेश सबलावत और सह-संयोजक विनोद जैन कोटखावदा के अनुसार आचार्य संघ का अगला पड़ाव इस प्रकार रहेगाः

बुधवार, 11 फरवरीः प्रातः 8:00 बजे चाकसू से विज्ञान तीर्थ (गुंशी) के लिए विहार होगा। मार्ग में आहार चर्या के उपरांत सायंकाल विज्ञान तीर्थ में मंगल प्रवेश और रात्रि विश्राम होगा।

गुरुवार, 12 फरवरीः निवाई में विशाल जुलूस के साथ भव्य मंगल प्रवेश और धर्म सभा का आयोजन किया जाएगा।

विहार यात्रा में राजेश रावकां, विनय सोगानी, आशीष चौधरी, अमित ठोलिया, विपुल छाबड़ा सहित हजारों गुरु भक्त निरंतर साथ चल रहे हैं।

निवाई में आचार्य प्रसन्न सागर महाराज का 16 पिच्छिका सहित भव्य मंगल प्रवेश आज

निवाई. शाबाश इंडिया

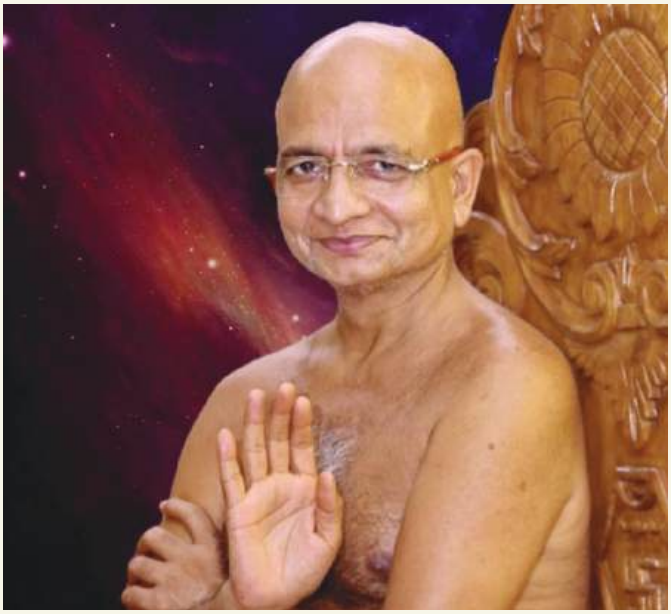

सकल दिगम्बर जैन समाज के तत्वावधान में परम पूज्य आचार्य प्रसन्न सागर महाराज का 16 पिच्छिका सहित 12 फरवरी को निवाई नगर में भव्य मंगल प्रवेश होगा। प्रवेश को लेकर नगर में व्यापक तैयारियां की जा रही हैं। समाज के मीडिया प्रभारी विमल जौंला एवं सुनील भाणजा ने बताया कि पुष्पगिरि तीर्थ प्रणेता आचार्य पुष्पदंत सागर महाराज के परम प्रभावक शिष्य आचार्य प्रसन्न सागर महाराज अपने संघ सहित दिल्ली से जयपुर, पदमपुरा (चाकसू) और विज्ञा तीर्थ होते हुए 12 फरवरी की प्रातः निवाई पहुंचेंगे। 11 फरवरी को वे विज्ञा तीर्थ में विराजेंगे। मंगल जुलूस जमात स्थित वर्धमान सर्विस सेंटर से गाजे-बाजे के साथ प्रारंभ होगा। राधा दामोदर सर्किल स्थित कुंडों के पास चरण प्रक्षालन एवं पुष्पवर्षा से अगवानी की जाएगी। मार्ग में विभिन्न स्थानों पर स्वागत तोरण द्वार सजाए जाएंगे तथा श्रद्धालुओं द्वारा आरती एवं अभिनंदन किया जाएगा। जुलूस पुलिस थाना मार्ग से होते हुए पारसनाथ उद्यान स्थित नसियां जैन मंदिर पहुंचेगा, जहां आचार्य श्री धर्मसभा को संबोधित करेंगे। प्रवक्ता विमल जौंला एवं हितेश छाबड़ा ने बताया कि निवाई नगरी पहली बार आचार्य श्री के पावन सान्निध्य से धन्य हो रही है। सन्त निवास नसियां जैन मंदिर में आयोजित प्रवचन सभा में आचार्य श्री अपनी देशना प्रदान करेंगे। मंगल प्रवेश के प्रमुख आकर्षणों में स्वागत तोरण द्वार, सम्पूर्ण मार्ग में ध्वज-पताकाएं, बैंड-बाजों की मधुर ध्वनि, ढोल-नगाड़ों का लवाजमा तथा देशभर से आने वाले श्रद्धालुओं की उपस्थिति शामिल रहेगी। समाजजनों में भारी उत्साह व्याप्त है। आचार्य प्रसन्न सागर महाराज त्याग एवं तपस्या के लिए विख्यात हैं। उनके आगमन को लेकर सम्पूर्ण निवाई नगर में श्रद्धा और उल्लास का वातावरण है।

हास्य कवि एवं आदर्श शिक्षक केशरदेव मारवाड़ी का सड़क दुर्घटना में निधन

डेह. शाबाश इंडिया

राजस्थान के सुप्रसिद्ध हास्य कवि एवं आदर्श शिक्षक केशरदेव मारवाड़ी का एक सड़क दुर्घटना में असामयिक निधन हो गया। उनके निधन की खबर मिलते ही साहित्य और सांस्कृतिक जगत में शोक की लहर फैल गई। लाडनूँ निवासी मारवाड़ी ने अपने विशिष्ट मंचीय अंदाज, शालीन हास्य और मारवाड़ी भाषा की सेवा के माध्यम से नागौर जिले का नाम देश-विदेश तक पहुंचाया। वे मंच पर केवल हास्य प्रस्तुत नहीं करते थे, बल्कि सामाजिक, राजनीतिक और समसामयिक विषयों को व्यंग्य के माध्यम से इस प्रकार रखते थे कि श्रोता हँसते-हँसते चिंतन करने को विवश हो जाते थे। उनके निधन को साहित्य जगत की अपूरणीय क्षति माना जा रहा है। साहित्यकार लक्ष्मणदान कविया, पवन पहाड़िया, डॉ. गजादान चारण, प्रहलादसिंह झोरड़ा, सत्यपाल सान्दू, सुखदेवसिंह गाड़ण, कुलदीप पारीक एवं गिरीराज व्यास सहित अनेक साहित्यकारों ने गहरा शोक व्यक्त करते हुए दिवंगत आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की। केशरदेव मारवाड़ी का जीवन साहित्य, शिक्षा और लोकभाषा के उत्थान को समर्पित रहा। वे भले ही आज हमारे बीच नहीं हैं, किंतु उनकी रचनाएं और मंचीय प्रस्तुतियां सदैव स्मरणीय रहेंगी।

जन्म कल्याणक महोत्सव : पाण्डुक शिला पर कलशाभिषेक हेतु कूपन व्यवस्था का पोस्टर विमोचन

जयपुर. शाबाश इंडिया। बाड़ा-पदमपुरा स्थित दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र में आगामी 19 फरवरी को भगवान पद्मप्रभु का जन्म कल्याणक महोत्सव श्रद्धापूर्वक मनाया जाएगा। इस पावन अवसर पर पाण्डुक शिला पर विराजमान शिशु तीर्थंकर के कलशाभिषेक का सौभाग्य सभी श्रद्धालुओं को सुलभ कराने हेतु एक विशेष कूपन व्यवस्था शुरू की गई है। इस व्यवस्था से संबंधित पोस्टर का विमोचन हाल ही में दुर्गापुरा जैन मंदिर में वरिष्ठ समाजसेवियों की उपस्थिति में संपन्न हुआ। इस अवसर पर दुर्गापुरा जैन मंदिर ट्रस्ट कमेटी के अध्यक्ष प्रकाश चांदवाड़, मंत्री राजेंद्र काला, डॉ. मोहन लाल मणि और महिला मंडल अध्यक्षा रेखा लुहाड़िया सहित अनेक गणमान्य सदस्य उपस्थित रहे। महोत्सव के सुव्यवस्थित संचालन हेतु कलश आवंटन की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी जैन बैंकर्स के उपाध्यक्ष पदम बिलाला को सौंपी गई है। वहीं, दुर्गापुरा क्षेत्र में कूपन वितरण का कार्य जैन बैंकर्स के अक्षय कुमार जैन द्वारा संभाला जाएगा। जैन बैंकर्स के अध्यक्ष भाग चंद जैन मित्रपुरा और कार्याध्यक्ष पदम बिलाला ने बताया कि विभिन्न श्रेणियों के कूपन द्वारा प्रत्येक श्रद्धालु को अभिषेक का अवसर प्रदान करने का प्रयास किया गया है। पोस्टर विमोचन के दौरान श्रद्धालुओं में कार्यक्रम को लेकर भारी उत्साह देखा गया।

मुर्शिदाबाद जिला कमेटी में युवा शक्ति का उदयः सेठी बने अध्यक्ष

मुर्शिदाबाद (पश्चिम बंगाल). शाबाश इंडिया

मुर्शिदाबाद जिला दिगंबर जैन समाज की नई कार्यकारिणी का गठन युवा नेतृत्व के साथ संपन्न हुआ। बरहमपुर में आयोजित आमसभा में श्री अरुण कुमार जैन सेठी (अरगांबाद) को सर्वसम्मति से अध्यक्ष नियुक्त किया गया है। उनके साथ श्री मनोज कुमार जैन बड़जात्या (धुलियान) को महामंत्री और श्री अनुज काला (बरहमपुर) को कोषाध्यक्ष के दायित्व सौंपे गए हैं। उल्लेखनीय है कि आचार्य प्रसन्न सागर महाराज की प्रेरणा से वर्ष 2002 से यह जिला समाज पूर्णतः संगठित है। इस समाज ने रात्रि विवाह, मृत्यु भोज और भेंट जैसी प्रथाओं को पूर्णतः वर्जित कर सामाजिक सुधार की एक मिसाल पेश की है। वर्तमान में जिला समाज द्वारा सम्मेद शिखरजी (तेरापंथी कोठी) में त्यागियों और व्रतियों के लिए स्थायी रूप से निःशुल्क चौका संचालित किया जा रहा है। जिले की यह एकता और अखंडता पूरे जैन समाज के लिए एक आदर्श नजीर है।

ऐलनाबादः श्रद्धा और उल्लास के साथ प्राचीन श्री श्याम मंदिर का 52वां वार्षिक महोत्सव प्रारंभ

ऐलनाबाद. शाबाश इंडिया

शहर के प्राचीन श्री श्याम मंदिर में बाबा खाटू वाले का 52वां विशाल वार्षिक महोत्सव धार्मिक श्रद्धा और भक्तिमय वातावरण में शुरू हुआ। महोत्सव के प्रथम दिन विधि-विधान और मंत्रोच्चारण के साथ 'श्री श्याम हवेली' का भव्य लोकार्पण किया गया।

भजनों पर झूमे श्रद्धालु

महोत्सव की पहली शाम विशाल संकीर्तन के नाम रही, जिसमें जयपुर से पधारी प्रख्यात गायिका तृप्ति लढ़ा ने अपनी मधुर प्रस्तुतियों से समां बांध दिया। हारे के सहारे बाबा श्याम हमारे और तू लखदातार जैसे भजनों पर श्रद्धालु भाव-विभोर होकर झूमने लगे।

भव्य ध्वजा एवं कलश यात्रा

महोत्सव के दूसरे दिन टिब्बी अड्डा स्थित बाबा रामदेव मंदिर से भव्य ध्वजा एवं कलश यात्रा निकाली गई। नगर के मुख्य बाजारों से गुजरी इस यात्रा में सैकड़ों महिलाएं सिर पर मंगल कलश धारण किए हुए थीं, वहीं पुरुष और बच्चे बाबा की ध्वजाएं थामे जयकारे लगा रहे थे। बाबा श्याम की आकर्षक झांकी मुख्य आकर्षण का केंद्र रही।

आगामी कार्यक्रम

कमेटी ट्रस्ट के प्रधान रतनलाल गिदड़ा, उप-प्रधान पवन कुमार कानसरिया और श्री श्याम कला मंडल के प्रधान मांगीलाल गिदड़ा ने बताया कि यह परंपरा पिछले 52 वर्षों से अनवरत जारी है। उन्होंने जानकारी दी कि महोत्सव के अगले चरण में मंदिर परिसर में अखंड ज्योति पाठ संपन्न होगा, जिसके बाद विशाल जागरण और भंडारे का आयोजन किया जाएगा। इस अवसर पर मंदिर कमेटी के पदाधिकारियों सहित बड़ी संख्या में समाजसेवी, गणमान्य नागरिक और दूर-दराज से आए श्रद्धालु उपस्थित रहे।